द्वारा लिखित मूलचंद पाटलि
शुक्रवार, 25 सितम्बर 2009 14:41 - अंतमि अद्यतन गुरुवार, 29 अक्टूबर 2009 15:04

□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□

मूलचंद पाटलि की नगिाहें उस पृष्ठ पर लखिे उन शब्दों पर मानो ठहर सी गई थीं, उन शब्दों में वह उस लंगड़े व्यक्ति के उछलते-कूदते देख सक्ता था। उसकी रीढ़ की हड्डी में एक सरिहन सी दौड़ गई। अचानक उसकी बेजान टांगों ने उसके होठों को कंपकंपाया ''अगर मै इस की जगह वहां होता''।

मूलचंद भी उस लंगड़े व्यक्ति के समान अपंग था। ''एक आश्चर्यकर्म मेरे साथ भी हो सक्ता है'' उसके दलि ने कहा। आशा ने उसके अंधकारपूर्ण और खन्नि जीवन में रोशनी की करिणें सी बखिेर दीं। वह रो पड़ा ''यीशु, अगर तू सच्चा परमेश्वर है तो मुझे भी चंगा कर, मुझे खड़ा हो सकने और चलने-फरिने के लायक बना''। उसके हृदय में वशि्वास की लहरें उठ रहीं थी, एक अद्भुत वशि्वास के साथ वो उठ खड़ा हुआ और खुद को चलता देख आश्चर्य से भर वो आनन्द से चीख उठा कि ''मसीहयिों के महान गुरू ने मुझे चंगा कर दयिा''। आनन्द से चीखता हुआ वो अपने पड़ोसयिों को ये समाचार सुनाने दौड़ पड़ा था और उसके पड़ोसी आश्चर्य चकति रह गये थे परन्तु जो आश्चर्यकर्म मूलचंद के जीवन में घटा, उसके जीवन में ये परवितन बाइबलि की ''प्रेरतिों के काम'' पुस्तक के तीसरे अध्याय को पढ़ने के पश्चात हुआ।

यह इस कुख्यात अपराधी के जीवन का एक अजीब मोड़ था। मूलचंद पाटलि का जन्म जबलपुर के एक हन्दिु परविार में हुआ। बड़ा होने पर वो जबलपुर के एक सनिेमाघर में काम करने लगा, और इसी दौरान उसे तम्बाकू, नशीली दवाओं और शराब की लत लग गई। उसका जीवन सब प्रकार से घृणति पापों, चोरी, डकैती, बलात्कार, मारपीट से घरि गया, उनमें लप्ति हो गया और इन सब के चलते उसे नौ बार जेल भी जाना पड़ा।

परन्तु इन सब पर ठहराव आया, 4 फरवरी 1987 को। नशे में धुत मूलचंद उसी सायकलि पर घर वापस लौट रहा था, जब एक तेज़ रफ्तार मोटर सायकलि ने उसे टक्कर मारी। एक ज़ोरदार झटके से वह दूर जा गरिा और उसका एक पैर बुरी तरह ज़ख्मी हो गया, डॉक्टों को दखिाया मगर छह माह की इस भागदौड़ के बाद उसे यह अहसास हो गया कि अब न तो वह चल सक्ता है और न ही अपने पैरों पर खड़ा हो सकने लायक वो रहा है। उसकी नौकरी भी छूट गई है और वह अपने घर की चारदीवारी में बंद हो कर रह गया। आमदनी का एकमात्र ज़रयि उसकी पत्नी की नौकरी थी जो कि एक स्कूल अध्यापकि थी और अब इसी साधारण आमदनी में परविार का गुज़ारा हो रहा था।

उसका जीवन अब कुछ ऐसा हो गया मानो कसिी आज़ाद पंछी के पंख कत्तर उसे पजिरे में बंद कर दयिा गया हो। हर ज़रूरत को पूरी करने के लि अब वह लोगों या अपनी बैसाखयिों पर नरि्भर था। उसे आनन्द देने वाले साधन अब उसकी पहुंच से दूर थे। दनि अंधकार से भरते गये और रातें लम्बी होती चली गईं। अकेलेपन और हताशा ने उसकी सोच पर कब्ज़ा जमा लयिा। ऐसी बद्तर हालत में मूलचंद को अपने सामने एक ही रास्ता नज़र आ रहा था, मौत।

मूलचंद की इस दुखद, हताश हालत को समझते हु उसकी पत्नी ने एक दनि उसे नया नयिम पढ़ने को दयिा, जो कि उसके स्कूल में एक सुसमाचार वतिरक ने उसे दयिा था। उसने मूलचंद को आश्वासन दलिाया कि इस पुस्तक को पढ़ने से नश्चिति ही उसके मस्तष्कि को शान्ति मलिेगी। परन्तु उसने उसे ''ईसाइसों की धार्मकि पुस्तक'' कहकर पढ़ने से इंकार कर दयिा। लेकनि उसकी पत्नी ने पुन नविेदन कयिा कि एक बदलाव के लि वह इसे ज़रूर पढ़े। अपनी पत्नी की बात मानकर मूलचंद ने यह नया नयिम ले लयिा। उसने चारों सुसमाचार को पढ़ा और ''प्रेरतिों के काम'' पढ़ना शुरू कयिा और तब तीसरे अध्याय में उसकी भेंट प्रेरतिों के ''महान गुरू'' से हुई। अपने शरीर में उसने जीवति परमेश्वर, बाइबलि के परमेश्वर की अद्भुत सामर्थ्य का अनुभव कयिा।

यह एक नयी शुरूआत थी। नये नयिम के पृष्ठों को पढ़ते हु मूलचंद ने एक अद्भुत शान्ति और सुकून को पाया। उसने एक मसीही कार्यकर्ता से सम्पूर्ण बाइबलि को प्राप्त कयिा और उसे पढ़ा। उसे यह अहसास हुआ कि अब उसे ज़रूरत है कि अपना जीवन यीशु के सौप दे और उससे अपने पापों की क्षमा हासलि करे। 1989 में उसने यीशु को अपना जीवन समर्पति करने के अपने प्रण को सार्वजनकि रूप से बपतस्मिा लेकर घोषति कयिा। उसके बाद बाइबलि कॉलेज में उसने दो साल का बाइबलि का प्रशक्षिण प्राप्त कयिा।

आज मूलचंद, परमेश्वर के वचन की अद्भुत सामर्थ्य की गवाही अपने जीवन से देने में लगा हुआ है। परमेश्वर के वचन बाइबलि को, अपनी गवाही के साथ वह अपने अन्य हन्दिू भाइयों के साथ बांट रहा है।

□□□□□□ □□□□□□, □□□□□□□ (□.□□□.)